रावण से विमुख और बाप के सम्मुख रहो

27-5-72

इस समय जो सभी बैठे हो सभी की इस समय की स्टेज श्रेष्ठ स्टेज कहें वा अव्यक्त स्थिति कहें? इस समय सभी की अव्यक्त स्थिति है वा अब भी कोई व्यक्त भाव में स्थित है? कोई भी व्यक्त स्थित होकर बैठेंगे तो अव्यक्त मिलन वा अव्यक्त बोल को धारण नहीं कर सकेंगे। तो अव्यक्ति स्थिति में स्थित हो? जो नहीं हैं वो हाथ उठावें। अगर इस समय अव्यक्त स्थिति में स्थित हो, व्यक्त भाव के भान से परे हो तो क्यों परे हो? सभी की एक ही अव्यक्त स्थिति क्यों बनी, कैसे बनी? अव्यक्त बापदादा के सामने होने कारण सभी की एक ही अव्यक्त स्थिति बन गई है। तो ऐसे ही अगर सदा अपने को बापदादा के सम्मुख समझ करके चलो तो क्या स्थिति होगी? अव्यक्त होगी ना। तो बापदादा के सदा सम्मुख रहने के बजाए बापदादा को अपने से अलग वा दूर क्यों समझ कर चलते हो? जैसे एक सीता का मिसाल सुनाते वा सुनते रहते हो कि सीता सदा किसके सम्मुख रहती थी-राम के। सम्मुख अर्थात् स्थूल में सम्मुख नहीं लेकिन बुद्धि से सदा बापदादा के सम्मुख रहना है। बापदादा के सम्मुख रहना अर्थात् रावण माया से विमुख रहना हैं। जब माया के सम्मुख हो जाते हो तो बाप से बुद्धि विमुख हो जाती है। जो अति प्यारे ते प्यारा सम्बन्ध होता है उससे स्वत: ही सम्मुख ही बैठने-उठने, खाने-पीने, चलने अर्थात् सदा साथ का अनुभव होता है। तो क्या बापदादा के सदा सम्मुख रहना अर्थात् रावण माया से विमुख रहना हैं। जब माया के सम्मुख हो जाते हो तो बाप से बुद्धि विमुख हो जाती है। जो अति प्यारे ते प्यारा सम्बन्ध होता है उससे स्वत: ही सम्मुख ही बैठने-उठने, खाने-पीने, चलने अर्थात् सदा साथ का अनुभव होता है। तो क्या बापदादा के सदा सम्मुख नहीं रह सकते हो? अगर सदा सम्मुख रहेंगे तो सदा अव्यक्त स्थिति रहेगी। तो दूर क्यों हो जाते हो? क्या यह भी बचपन का खेल करते हो? कई ऐसे बच्चे होते हैं जो जितना ही मां-बाप पास में बुलाते हैं उतना ही नटखट होने कारण दूर भागते हैं। तो क्या यह अच्छा लगता है? सदा अपने को सम्मुख समझने से अपने को

सदा आलमाइटी अथार्टी महसूस करेंगे। आलमाइटी अथार्टी के आगे और भी अथार्टी वार नहीं कर सकती है वा आलमाइटी अथार्टी कब भी हार नहीं खा सकते हैं। आज अल्पकाल की अथार्टी वाले भी कितने शक्तिशाली रहते हैं! तो आलमाइटी अथार्टी वाले तो सर्वशक्तिवान् हैं ना। सर्वशक्तियों के आगे अल्पकाल की शक्ति वाले भी सिर झुकाने वाले हैं। वार नहीं करेंगे लेकिन सिर झुकायेंगे। वार के बजाए बार-बार नमस्कार करेंगे। तो ऐसे अपने को आलमाइटी अथार्टी समझकर के फिर हर कदम उठाते हो? अपने को आलमाइटी अथार्टी समझना अर्थात् आलमाइटी बापको सदा साथ रखना है। जैसे देखो आजकल के भक्ति मार्ग के लोगों को कौनसी अथार्टी है? शास्त्रों की। उन्हों की बुद्धि में सदा शास्त्र ही रहेंगे ना। कोई भी काम करेंगे तो सामने शास्त्र ही लायेंगे, कहेंगे-यह जो कर्म कर रहे हैं वह शास्त्र प्रमाण हैं। तो जैसे शास्त्रों की अथार्टी वालों को सदा बुद्धि में शास्त्रों का आधार रहता है अर्थात् शास्त्र ही बुद्धि में रहते हैं। उनके सम्मुख शास्त्र हैं, आप लोगों के सामने क्या है? आलमाइटी बाप। तो जैसे वह कोई भी कार्य करते हैं तो शास्त्रों का आधार होने कारण अथार्टी से वही कर्म सत्य मानकर करते हैं? कितना भी आप मिटाने की कोशिश करो लेकिन अपने आधार को छोड़ते नहीं हैं। कोई भी बात में बार-बार कहेंगे कि शास्त्रों की अथार्टी से हम बोलते हैं, शास्त्र कब झूठे हो ना सकें, जो शास्त्रों में है वही सत्य है। इतना अटल निश्चय रहता है। ऐसे ही जो आलमाइटी बाप की अथार्टी है उसकी अथार्टी से सर्व कार्य हम करने वाले हैं, यह इतना अटल निश्चय हो जो कोई टाल ना सके। ऐसा अटल निश्चय है? सदैव अपनी अथार्टी भी याद रहे कि दूसरे की अथार्टी को देखते हुए अपनी अथार्टी भूल जाती है? सभी से श्रेष्ठ अथार्टी के आधार पर चलने वाले हो ना। अगर सदैव यह अथार्टी याद रखो तो पुरुषार्थ मे कब भी मुश्किल मार्ग काअनुभव नहीं करेंगे।कितना भी कोई बड़ा कार्य हो लेकिन आलमाइटी अथार्टी के आधार से अति सहज अनुभव करेंगे। कोई भी कर्म करने के पहले अथार्टी को सामने रखने से बहुत सहज जज कर सकते हो कि यह कर्म करें वा ना करें। सामने अथार्टी का आधार होने कारण सिर्फ उनको कापी करना है। कापी करना तो सहज होता है वा मुश्किल होता है? हां वा ना, उसका जवाब अथार्टी को सामने रखने से ऑटोमेटिकली आपको आ जाऐगा। जैसे आजकल साईस ने भी ऐसी मशीनरी तैयार की है जो कोई भी क्वेश्चन डालो तो उसका उत्तर सहज ही मिल आता है। मशीनरी द्वारा प्रश्न का उत्तर निकल जाता है तो दिमाग चलाने से छूट जाते हैं। तो ऐसे ही ऑलमाइटी अथार्टी को सामने रखने से जो भी प्रश्न करेंगे उनका उत्तर प्रैक्टिकल में आपको सहज ही मिल जाएगा। सहज मार्ग अनुभव होगा। ऐसे सहज और श्रेष्ठ आधार मिलते हुए भी अगर कोई उस आधार का लाभ नहीं उठाते तो उसको क्या कहेंगे? अपनी कमजोरी। तो कमजोर आत्मा बनने के बजाए शक्तिशाली आत्मा बनो और बनाओ। अपने को ऑलमाइटी अथार्टी समझने से ३ मुख्य बातें ऑटोमेटिकली अपने में धारण हो जाएंगी। वह तीन बातें कौनसी?

बुद्धि की ड्रिल करने से सुना हुआ ज्ञान दुहराते हो। यह भी अच्छा है, इससे भी शक्ति बढ़ती है। कोई भी अथार्टी वाले होते हैं, साधारण अथार्टी वालों में भी ३ बातें होती हैं-एक निश्चय, दूसरा नशा और तीसरा निर्भयता। यह तीन बातें अथार्टी वाले रांग होते भी, अयथार्थ होते भी कितना दृढ़ निश्चय बुद्धि होकर बोलते वा चलते है। जितना ही निश्चय होगा उतना निर्भय होकर नशे में बोलते हैं। ऐसे ही देखो, जब आप सभी ऑलमाइटी अथार्टी हो,

सभी से श्रेष्ठ अथार्टी वाले हो तो कितना नशा रहना चाहिए और कितना निश्चय से बोलना चाहिए। और फिर निर्भयता भी चाहिए। कोई भी किस भी रीति से हार खिलाने की कोशिश करे लेकिन निर्भयता, निश्चय और नशे के आधार पर कब हार खा सकेंगे? नहीं, सदा विजयी होंगे। विजयी ना होने का कारण इन तीन बातों में से कोई बात की कमी है, इसलिए विजयी नहीं बन पाते हो। तो यह तीनों ही बातें अपने आप में देखो कि कहां तक हर कदम उठाने में यह बातें प्रैक्टिकल में हैं? एक होता है टोटल नॉलेज में, बाप में निश्चय। लेकिन कोई भी कर्म करते, बोल बोलते यह तीनों ही क्वॉलिफिकेशन रहें। वह प्रैक्टिकल की बात दूसरी होती है और जब यह तीनों बातें हर कर्म, हर बोल में आ जाएंगी तब ही आपके हर बोल और हर कर्म ऑलमाइटी अथार्टी को प्रत्यक्ष करेंगे। अभी तो साधारण समझते हैं। इन्हों की अथार्टी स्वयं ऑलमाइटी बाप है यह नहीं अनुभव करते है। यह अनुभव तब करेंगे जब एक सेकेण्ड भी अथार्टी को छोड़ करके कोई भी कर्म नहीं करेंगे वा बोल नहीं बोलेंगे। अथार्टी को भूलने से साधारण कर्म हो जाता है। तो अन्य लोगों को भी साधारण, जैसे अन्य लोग थोड़ा बहुत कर रहे हैं, वैसे ही अनुभव होता है। जो आते भी हैं तो रिजल्ट में क्या कहते हैं? आप लोगों की विशेषता को वर्णन करते हुए साथ में विशेषता के साथ साधारणता भी जरुर वर्णन करते रहते हैं। और संस्थाओं में भी ऐसे हैं, जैसे वह कर रहे हैं, वैसे यह भी कर रहे हैं। तो साधारणता हुई ना। एक दो बात विशेष लगती है लेकिन हर कर्म, हर बोल विशेष लगे जो और कोई से तुलना ना कर सकें वह स्टेज तो नहीं आई है ना। ऑल-माइटी की कोई भी एक्टिविटी साधारण कैसे हो सकती? परमात्मा के अथार्टी और आत्माओं के अथार्टी में तो रात-दिन का फर्क होना चाहिए। ऐसा अपने आप मे अर्थात् अपने बोल और कर्म में अन्य आत्माओं से रात-दिन का अन्तर महसूस करते हो? रात-दिन का अन्तर इतना होता है जो कोई को समझाने की आवश्यकता नहीं होती कि यह अन्तर है। ऑटोमेटिकली समझ जाएंगे-यह रात, यह दिन है। तो आप भी जबकि ऑलमाइटी अथार्टी के आधार से हर कर्म करने वाले हो, हर डायरेक्शन प्रमाण चलने वाले हो तो अन्तर रात-दिन का दिखाई देना चाहिए। ऐसे अन्तर हो जो आने से ही समझ लें कि कोई साधारण स्थान नहीं। इन्हों की नालेज साधारण नहीं। ऐसा जब प्रभाव पड़े तब समझो अपनी अथार्टी को प्रत्यक्ष कर रहे हैं। जैसे शास्त्रवादियों के बोल दिखाई देते हैं कि इन्हों को शास्त्रों की अथार्टी है, वैसे आपके हर बोल से अथार्टी प्रसिद्ध होनी चाहिए। फाईनल स्टेज तो यही है ना। बोल से, चेहरे से, चलन से सभी से अथार्टी का मालूम पड़ना चाहिए। आजकल के जमाने में अगर छोटी-मोटी अथार्टी वाले ऑफीसर अपने कर्तव्य में जब होते हैं तो कितना अथार्टी का कर्म दिखाई देता है। नशा रहता है ना। उसी नशे से हर कर्म करते हैं। वे हद के साक्षात्कार की अथार्टी हैं। यह है अलौकिक अविनाशी अथार्टी।

ऐसे अथार्टी बाप को सम्मुख रख अथार्टी से चलने वाली आत्माओं को नमस्ते